अलंकार–

'काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म अलंकार कहलाते हैं।"

(2) प्रकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न किया जाए

श्लेष, यमक, अनुप्रास, वीप्सा ।

अर्थलिंकार

जहाँ अर्थ के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न हो ।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान..

उपमा अलंकार

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहां उपमा अलंकार होता है।

अथवा

जहाँ उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसके चार अंग होते हैं-

उदाहरण- पीपर पात सरिस मन डोला ।

उपमेय - जिसकी तुलना की जाती है। (मन)

उपमान- जिससे तुलना की जाती है। (पीपर पात)

साधारण धर्म - जिसके कारण उपमेय और उपमान में तुलना दिखायी जाती है। (डोला)

वाचक शब्द- वे शब्द जिनसे तुलना प्रकट हो । (सरिस)

पहचान :- सरिस, सम, समान, भाँति के जैसे, की तरह, इत्यादि वाचक शब्द होंगे वहाँ उपमा अलंकार होगा।

उदाहरण:-

» हरि पद कोमल कमल से ।

» मुख मयंक सम मंजु मनोहर ।

» तुम्हारा मुख चंद्र सम है।

» फूलों सा चेहरा तेरा कलियों सी मुस्कान है।

रूपक अलंकार-

जहाँ उपमेय में उपमान का भेदरहित आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पहचान- रूपी अर्थ निकलेगा / योजक चिह्न (-) लगा होगा।

उदाहरण:-

- चरन - कमल बंदौ हरि राई।"
- उदित उदयगिरि मंच, पर रघुवर बाल पतंग।
- मनसागर मनसा लहरि, बड़े बहे अनेक।"
- "शशि- मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाए ॥"

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान- मनु, मानो, जनु, जानौ, मानहु, जानहु, मनहु, जनहु, ज्यों आदि शब्द प्रयुक्त होगे।

उदाहरण:-

- चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पट झीन। मानहु सुरसरिता विमल जल उछरत जुग मीन ॥"
- सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
  मनहु नीलमणि शैल पर आतपु परयो प्रभात ॥"

धाये धाम काम सब त्यागी । मनहु रंक निधि लूटन लागी । "
चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी । तिलक रेख सोभा जनु चाँकी ॥

संदेह अलंकार

जब किसी पद में समानता के कारण उपमेय में उपमान का संदेह उत्पन्न हो जाता है और यह संदेह अन्त तक बना रहता है तो वहाँ संदेह अलंकार माना जाता है।

उदाहरण:-

- " सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
  सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है ।। "

महाभारत काल में द्रौपदी के चीर हरण के समय उसकी बढ़ती साड़ी (चीर) को देखकर दुःशासन के मन में यह संशय उत्पन्न हो रहा है कि यह साड़ी के बीच नारी (द्रौपदी) है या नारी के बीच साड़ी है अथवा साड़ी नारी की बनी हुई है या नारी साड़ी से निर्मित है।

- 'कहूँ मानवी यदि मैं तुझको तो वैसा संकोच कहाँ ?
  कहूँ दानवी तो उसमें है, लावण्य की लोच कहाँ ?

वन देवी समझूँ तो वह होती है भोली भाली,
तुम्ही बताओ अतः कौन तुम, हे रमणी! रहस्यवाली ।।

प्रस्तुत पद में रूपपरिवर्तिता शूर्पणखा को देखकर लक्ष्मणजी यह निर्णय नहीं कर पा रहे है कि वह किसी मानव की स्त्री है अथवा किसी दानव की स्त्री है अथवा कोई वनदेवी है तथा अन्त तक भी अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है, अतः यहाँ संदेह अलंकार है।

- बाली बिसाल बिकराल ज्वाल जाल मानौ
लंक लीलबे को काल रसना पसारी है।
कैधौं ब्योम बीथिका भरे है भूरि धूमकेतु,
बीररस वीर तरवार सी उधारी है।
तुलसी सुरेस चाप कैधौं दामिनि कलाप
कैध चली मेरु ते कृसानु – सरि भारी है।
देखे जातुधान जातुधानी अकुलानी कहैं,
कानन उजार्यो अब नगर प्रजारी है ।।

भ्रांतिमान अलंकार

परिभाषा जब किसी पद में किसी सादृश्य विशेष के कारण उपमेय में उपमान का भ्रम उत्पन्न - जाता है तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाता है।

उदाहरण:-

- "भ्रमर परत शुक तुण्ड पर, जानत फूल पलास ।
  शुक ताको पकरन चहत, जम्बु फल की आस ।।
- " नाक का मोती अधर की कान्ति से,
  बीज दाडिम का समझकर भ्रान्ति से।
  देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
  सोचता है अन्य शुक यह कौन है ।। "

यहाँ नाक के आभूषण के मोती में अनार (दाडिम) के बीज का भ्रम उत्पन्न हो रहा है, अतःयहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

अनुप्रास अलंकार

परिभाषा-

जहाँ समान वर्णों की बार-बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण-रघुपति राघव राजा राम।
पतित पावन सीता राम ॥

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त उदाहरण की प्रथम पंक्ति में 'र' वर्ण की तथा द्वितीय पंक्ति में 'घ' वर्ण की आवृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अनुप्रास के भेद

- अनुप्रास के कुल 5 भेद हैं

1. हैकानुप्रास
2. वृत्यानुप्रास
3. अन्त्यानुप्रास
4. श्रुत्यानुप्रास
5. लाटानुप्रास

1.छेकानुप्रास-

परिभाषा- जहाँ एक वर्ण की आवृत्ति केवल एक ही बार हो।

उदाहरण-कहत कत परदेशी की बात।

" रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठे।
साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई ॥"

“इस करुणा कलित हृदय में
क्यों विकल रागिनी बनती।“

2. वृत्यनुप्रास

परिभाषा-जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो ।

उदाहरण-तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बेहु छाए।

अथवा

- कारी क्रूर कोकिला कहाँ को बैर काढ़ति री ॥
- कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि,।

कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि॥

3.श्रुत्यनुप्रास

परिभाषा- जहां कण्ठ तालू दन्त आदि एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों की आवृत्ति हो।

उदाहरण- तुलसीदास सीदति निसिदिन
देखत तुम्हारि निठुराई ॥"

"तेही निसि सीता पहुँ जाई ।
त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥"
" दिनान्त था, थे दिननाथ डूबते ।
सधेनु आते गृह ग्वाल बालथे॥"

4.लाटानुप्रास

परिभाषा- जहाँ एकार्थक शब्दों की आवृत्ति हो तथा अन्वय करने पर अलग हो जाए।

उदाहण-

पूत कपूत, तो क्यों धन संचय ?
पूत सपूत, तो क्यों धन संचय ?

"राम भजन जो करत नहिं भव बंधन भय ताहि।
राम भजन जो करत नहिं भव बंधन भय ताहि ॥"

5.अन्त्यानुप्रास-

परिभाषा-जहाँ शब्दों के अन्त में वर्षों की आवृत्ति हो ।

उदाहण- जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।

अथवा

- कहत नटत रीझत खीझत, मिलत खिलत लजियात् ।
- " तुझे देखा तो यह जाना सनम,
  प्यार होता है दीवाना सनम ॥
- "आपका आना, दिल धड़काना
  मेहंदी लगा के यूँ शरमाना ।

यमक अलंकार

परिभाषा-यमक का अर्थ → युग्म / जोड़ा

जहाँ एक शब्द अथवा शब्द-समूह का एक से अधिक बार प्रयोग हो परन्तु अर्थ अलग- अलग हों वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

उदाहरण-

ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

स्पष्टीकरण-ऊँचे घोर मंदर' वाक्य का दो बार प्रयोग हुआ है परन्तु दोनों का अर्थ भिन्न है।

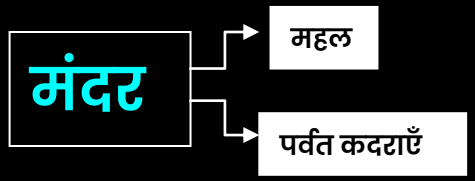

इसलिए यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण:-

" कनक- कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
वा पाए बौराय जग, वा खाए बौराय ॥" अथवा

" इकली डरी हौं घन देखि के डरी हौं।
खाय बिष की डरी हौं घनस्याम मरि जाइ हौं॥"

डरी ⟶ पड़ी, भयभीत, डली/ टुकड़ा, ।

अथवा

काली घटा का घमंड घटा
नभ मण्डल तारक वृंद खिले॥

घटा ⟶ काले बादल ⟶ कम हुआ।

भजन-

" माला फेरत जुग भया, फिरा नमन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर॥"

मनका ⟶ आत्मा/मन का
⟶ कण्ठ के माला का मनका

श्लेष अलंकार

परिभाषा- श्लिस्ट → चिपका हुआ।

जब एक शब्द का एक ही बार प्रयोग हो तथा अर्थ दो या दो से अधिक हो तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून ॥

पानी → चमक / तेज-मोती के पक्ष में।
→ प्रतिष्ठा- मनुष्य के पक्ष में।
→ जल – चूने के पक्ष में।

अथवा

चरन धरत चिंता करत, चितवत चारिउ ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर॥

सुबरन → सुवर्ण- सुन्दर अक्षर- कवि के पक्ष में।
→ सुवर्णा नारी- व्यभिचारी के पक्ष में।
→ सोना-चोर के पक्ष में।

"चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ये वृष्भानुजा, वे हलधर के बीर ॥

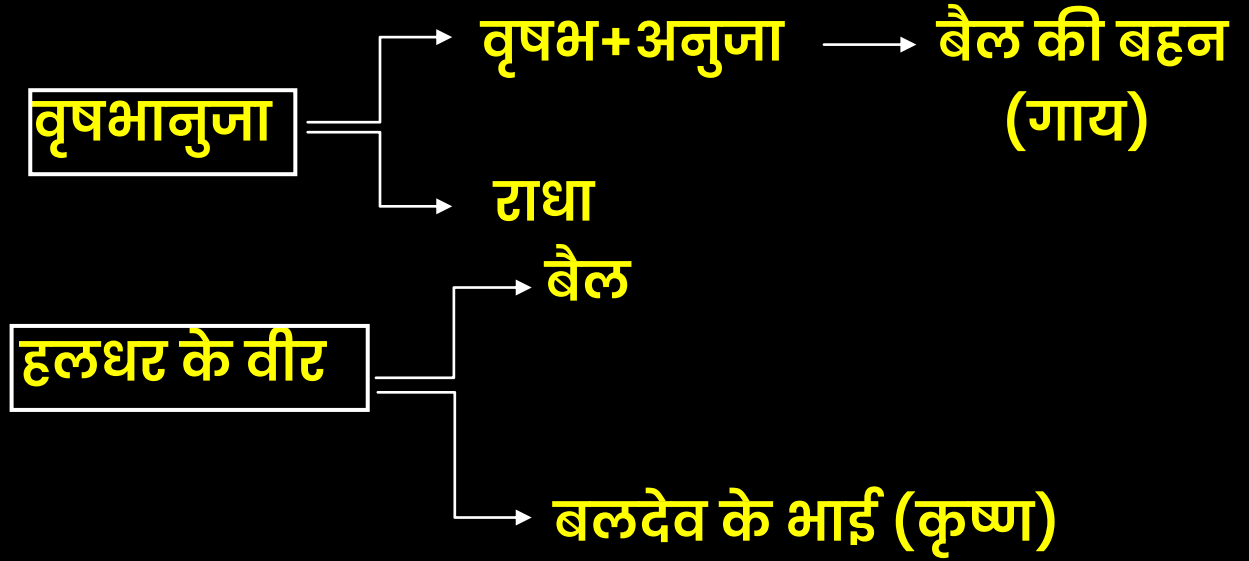

अनन्वय अलंकार

परिभाषा -

'जहाँ पर उपमेय को ही उपमान बना दिया जाता है, वहाँ अनन्वय अलंकार होता है।"

उदाहण-

"तुम्हारा मुख-मुख जैसा है। "
"राम से राम सिया सी सिया ।"

प्रतीप अलंकार

परिभाषा – प्रतीप → अर्थ 'उल्टा' होता है।

इस अलंकार में 'उपमा' के विपरीत स्थिति होती है। "जहाँ उपमान को उपमेय बना दिया जाए, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।"

उदाहरण–

" 'चन्द्र तुम्हारे मुख जैसा है। " "

" उतरि नहाए जमुन जल जो
सरीर सम स्याम ।"

सखि! मयंक तव मुख सम सुन्दर ।"

"मुख आलोकित जग करै, कहो
चंद किह काम "

दृष्टान्त अलंकार

परिभाषा- जहाँ उपमेय व उपमान के साधारण धर्म में भिन्नता होते हुए भी बिम्ब-प्रतिनिम्न भाव से कथन किया जाए वहाँ 'दृष्टान्त' अलंकार होता है।

उदाहरण-

" दुसह, दुराज प्रजानु को क्यों न बढ़े दुःख द्वन्द्व ।
अधिक अन्धेरो जग करत मिलि मावस रवि चन्द ॥"

अथवा

"कोई दुश्मन कभी शाँति के बीज नहीं जो सकता है। "
और भेड़िया शाकाहारी कभी नहीं हो सकता है।"

अथवा

" एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती है।"
किसी और पर प्रेम नारियाँ पति का क्या सह सकती हैं ।।"

अथवा

"पापी मनुज भी आज मुख से राम-नाम निकालते ।
देखो भयंकर भड़िये भी आज आँसू ढालते ।।"

यहाँ पापी मनुज का प्रतिबिम्ब भेड़िये में तथा राम-नाम का प्रतिबिम्ब आँसू से पड़ रहा है ।

अतिशयोक्ति अलंकार

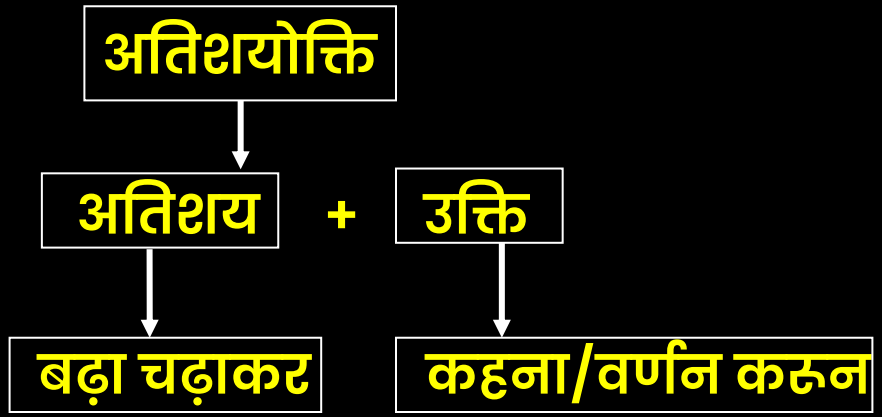

परिभाषा-

"जहाँ पर किसी वस्तु, घटना अथवा परिस्थिति की वास्तविकता का बढ़ाचढ़ाकर वर्णन किया गया हो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।" ,

उदाहरण-

- अब जीवन की कपि आस न कोय।
  कनगुरिया की मुंदरी कंगना होय ॥"

अथवा

- हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग।
  लंका सिगरी जल गयी, गए निसाचर भाग ॥ "

"एक का मारैं दुइ गिरि जावैं, तीसर खौफ खाय मरि जाइ ॥"

अथवा

"भूप सहस दस एकहि बारा लगे उठावन टरहि न टारा ॥ "